मेला देवीधुरा की यात्रा

[कुमाउंनी कविता में]

लेखक :—

चिन्तामणि पालीवाल

प्रकाशक :—

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

प्रकाशन विभाग :—

कुमाउंनी साहित्य सदन

चौरासी घन्टा बाजार सीताराम दिल्ली-११०००६

[संस्करण ३०००]

सर्वाधिकार सुरक्षित

[मूल्य ७५ पै

मेला देवीधुरा की यात्रा

[कुमाउंनी कविता में]

लेखक :—
चिन्तामणि पालीवाल

प्रकाशक :—
पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

प्रकाशन विभाग :—
कुमाउंनी साहित्य सदन
चौरासी घन्टा बाजार सीताराम दिल्ली-११०००६

संस्करण २०००] सर्वाधिकार सुरक्षित [मूल्य ७५ पैसे

सुसम्मति

कुमाउंनी प्रसिद्ध कवि श्री चिन्तामणि पालीवाल कुमाऊं के मेले त्यौहारों तीर्थ धाम वद्रीनाथ हिमालय आदि की याद ताजा करने के लिए समय-समय पर कुमाउंनी कविताओं में लिखते रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में श्रावण पूर्णमासी को होने वाले देवी धुरा के मेले पर लिखी है जिसमें उन्होंने देवी के मन्दिर का अलौकिक दृश्य तथा वहां के प्राकृतिक सौदर्य का वर्णन किया है और स्व० श्री खुशीराम टमटा जी भूतपूर्व एम. एल. ए. प्रधान शिल्पकार समिति पर भी अच्छा प्रकाश डाला है। इनकी सभी रचनायें कुमाउंनी साहित्य की निधि वनती जा रही हैं। सफलता के लिए मेरी शुभ कामना है।

बहादुर राम टमटा
निगमायुक्त दिल्ली नगर निगम

भूमिका

श्री बाराही देवी देवीधुरा

यह स्थान भरतखण्ड आर्यावर्त के हिमवतखण्ड में स्थित जिला अल्मोड़े के
र्वी भू-भाग के अन्तर्गत पट्टी चालसी में कुमाऊं के ऊंचे शिखर पर अनादि
काल से विद्यमान है। यह एक सिद्ध पीठ व अद्भुत चमत्कार सिद्धियों की
ाता है। जो श्री वाराही के नाम से प्रसिद्ध है। यहां का प्राकृतिक सौदर्य
हस्त्रों वर्षों के विशाल देवदार के वृक्षों की शोभा एवं पर्वताकार उर्धमूल
सदृश्य पत्थर, शीतल जल, सुगन्धित वायु, फल फूल तथा सघन वन से
अलौकिक शोभा से व्याप्त है। वाराही देवी प्राचीन काल कत्यूरी
चन्द राजाओं के जमाने से सर्वपूजित है। सकल कामना सिध्यर्थत
नवांछित वरदायिनी साक्षात शिवारूप है। इसके पुजारी उन्हीं राजाओं के
ाल से बन्धान व हक-हकूक के अधिकारी हैं।

यह स्थान पहली शताब्दी से पूर्व केवल तपोमय था। दार्शनिक भक्तगण
र-दूर से पूजा करने आते थे। उन्हीं दिनों में अल्मोड़ा निवासी स्वर्गीय
ामदत्त जी गुरानी यहां आए। आप देवी माता के उपासक भक्तों में
ारोमणि थे। देवी माता की अनुकम्पा से आपको यहां पर व्यापारिक कार्य
सफलता प्राप्त हुई। तब से यह स्थान विकसित होता गया। जब कि पहले
हां एकमात्र डाक बंगला था। पुनः बेनीराम चिकित्सालय, वाराही संस्कृत
द्यापीठ, मिडिल के साथ-साथ हाई स्कूल मान्यता प्राप्त, वन विभाग केन्द्र
रकारी डाक विभाग व पटवारी क्वार्टस की स्थापना हुई। हाल में मोटर
ातायात जो कि टनकपुर, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, हल्द्वानी व नैनीताल आदि
ानों से सीधा सम्बन्ध होने से इस स्थान की शोभा भौगोलिक ऐतिहासिक
वं प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है।

इसी स्थान पर आस्विन नवरात्रियों में समस्त कुमाऊं के आदिवासी तथा बाहर के भक्तगण यहां पूजा के लिए आया करते हैं। इन्ही नवरात्रियों में देवी के प्रांगण में वाराही माता के निमित्त रामचरित मानस कथा, लीला नाटक अभिनय के रूप में स्थानीय व्यक्तियों के प्रयास से होती चली आ रही है।

इस प्रकार वाराही देवी, देवी धूरा का संक्षिप्त इतिहास व श्रावणी पूर्णमासी रक्षाबन्धन मेले के सम्बन्ध में कुमाऊं के कवियों में प्रसिद्ध आधुनिक जनकवि श्री चिन्तामणि पालीवाल जी ने अपनी रचना में सारगर्भित शब्दों से जीता जागता चित्र खेंचकर कुमाउंनी भाषा में इस पुस्तक को नया रूप देकर लोकप्रिय बनाया है। आपने कुमाउंनी साहित्य सदन दिल्ली से समय समय पर कुमाउंनी भाषा में अनेकों पुस्तकें लिखी हैं जिसमें कुमाऊं के मनोनीत नेता, लेखक, विद्वान, साहित्यकार, संगीतज्ञ, गायक ज्योतिष, वैद्य व डाक्टर आदि भद्र पुरुषों की उपमा भी दर्शाई है। आ गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस का अनुवाद भी कुमाऊनी प पद्यों में किया है और विगत नारी वर्ष में पर्वतीय नारी समाज पुस्तक लि प्रधानमन्त्री के २० सूत्री कार्य-क्रम पर अच्छा प्रकाश डाला है गत चैत्र श्री पुन्यागिरी महात्म्य में ५१ सिद्ध पीठों की कथा व स्थानों का वर्णन लिखकर छपाया है। इसलिए आपका यह कार्य हमेशा समाज की सेवा लिए हो रहा है और आजीवन होता रहेगा। मेरा इस स्थान यहाँ के समाज एवं लेखक कवियों से घनिष्ठता का सम्बन्ध चला आ रहा है इस हेतु यह भूमिका लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

भूमिका लेखक:—योगीराज बाबा खेमानाथ
संगीत विशारद चारों धाम यात्रा सम्पन्न

कुमाउंनी साहित्य मुद्रक चौरासी घण्टा बाजार सीताराम दिल्ली

देवी धुरा का मेला

सरस्वती माता करू प्रणाम ।
सगुण साकार सुमिरौ नाम ॥
वाराही देवी कौ धरिवै ध्यान ।
भगवती माता का सुणौ बयान ॥
वाराही देवी देवि धूरा डना ।
देवी का सब करौ दर्शना ॥
पर्वतों बीचम देवी कौ स्थान ।
उच्चा पर्वतम सुन्दर स्थान ॥
उति की शोभा वर्णन कनू ।
दुर्गा माता कौ ध्यान धरनू ॥
द्यारा का पेड़ वां भौते विशाल ।
कुर्जुत देखो और कमाल ॥
ठुल-ठुला पत्थर भौत विशाल ।
एक हैबे ठुला एक कमाल ॥
सौणाका म्हैण पौण मासी ऐंछा ।
उति की शोभा निराली हैछा ॥
द्यौ असाड़ि कौ लागुछा मेला ।
गीत लै बाद झोड़ा चौसेला ॥

भजन कीर्तन पूजा लै पाठ।
दुर्गा की पूजा चन्डी को पाठ॥
श्रावण शुक्ला चौदसा दिन।
अठवाड़ हैंछा तब उ दिना॥
अष्ट बलि कौ पर्व मनानी॥
दूर-दूर बटि अठवाड़ ल्यानी॥
जतीया बकरा भेड़ कुखुड़ा।
तितरा च्याखुड़ा मुस भ्याकुड़ा॥
देवी कैं उति बलि चढ़ीछा।
आठ जीवों की अठवाड़ हैंछा॥
देवी धूरा का इलाका वाला।
नैनताल जिला अन्मोड़ा वाला॥
दूर-दूर बटि जतरा ल्यानी।
देवी माता कौ डोल उठानी॥
कठ्यड़ा बकरा दगड़ै ल्यानी।
देवी का मुन्ड नाचनें आनी॥
नगंरा निसाण बजानी ढोल।
ताल खड़ताल जैकार बोल॥
द्वि तीन दिन बटा रहनी।
तिसरा दिन उति पुजनी॥
तब मन्दिर की परिक्रमा हैंछा।
द्वि गोवों बीचम भगवती रैछा॥

देखि लीयो आब यांकि कुजरता ।
भीतरे जाहणि पतली रस्ता ॥
लेकिन कुजरत कहि निजानी ।
द्वि दुर्गो भीतेर सब न्है जानी ॥
ठुल-ठुल कव्यड़ा बकरा सब ।
द्वि दुर्गो भीतेर न्है जानी तब ॥
परिक्रमा करि श्यार ऐं जानी ।
देवी की तब जतरा लानी ॥
घम नाचनी खुशी है जानी ।
तब देवी कणि बलि चढ़ानी ॥
कव्याण बकरा सब अठवाड़ा ।
दिन भरि रैंछा बड़ि भीड़ भाड़ ॥
उदिन म्यलौ बलि कै हयो ।
बाकी बजार सजि रहौय ॥
दूसरा दिन बगवाव हैछा ।
दो तरफा वै पब्लिक ऐछा ॥
नंगरा ढोल बजानै आनी ।
देवता सब नाचनै आनो ॥
भगवती माता का जै कार कनी ।
बाराही माता को ध्यान धरनी ॥
दो तरफा का द्वीय छै आल ।
हाथों पार छै बड़-बड़ा ढाल ॥

देवी का मन्दिर ऐ गया जब ।
पत्थर बरमाण लैं गया तब ॥
दो तरफा वै द्विये छै आल ।
एक महैरा एक फर्त्याल ॥
वार वै पार हैं गोत्र चलानी ।
लम्थर पत्थर ढुंग चलानी ॥
पत्थर लमथर द्योखिनी कसा ।
मथ वै ओला बरसनी जसा ॥
लें ति को कुजरता यौछा ।
चोट कै कणि लगानी निछा ॥
खु च्चर कुछ निहना ।
लागि लै गेता क्वे नि मरना ॥
कैकणी मुणी लागिगे जब ।
मामूली खुन एगोय जब ॥
उ भगवती कणि अरपड़ हौछा ।
भगवती माता को परसाद हौछा ॥
कतरै चाहे घाव है जाछा ।
सिसौण लगै वै भल जाछा ॥
झगड़ौ निछ उ आपसी खेल ।
आपस मजि रहौछा मेल ॥
बगवाव हैछा देखण लैक ।
किताब लेखिच पढ़ण लैक ॥

बीचम पूराणौ हिनौला एक।
भौत प्राचीन छाउ विषेक॥
एक पार्टी छा हिनौला वार।
दूसरी आल हिनौला पार॥
भरपूर बगवाव है रैछ जब।
नर लै नारी देखनी तब॥
बड़ा-बड़ा अफसर ऐरनी तब।
नेता मेम्बर ऐरनी सब॥
इलाका हाकीम तहसील दार।
पट्टी का पटवारी व थानेदार॥
सब एरयी देखनी सब।
सरकारी इनजाम रहौछा तब॥
द्वि घन्ट रैछ एसि बगवाव।
पैजांसि जाण लै जानी ध्याव॥
बगवाव खतम है गेछ ऐल।
अब कौतिकैं देखि लियो सैल॥

मेले की शोभा

म्यलौ लैं रौछा वड़ घमाशान।
बड़ा-बड़ा लैरी भला दुकान॥
देश का देशवाई ऐरयीं लाला।
खेल खिलौना चुड़ियों वाला॥

काटा फिलिपा रिमन फुन्दा ।
नाखै की फुलि कानू का बुन्दा ॥
हातै की अंगूठी और जंजीर ।
खूटौं पंजेब भला सब सीर ॥
विसात खाना एरौछ सब ।
जै कणि उति ज्य चैछ तब ॥
किताबों की वां लै रै दुकान ।
जनुलै हौचा बड़-बड़ौ ग्यान ॥
कुमाऊंनी सब ऐ रै किताप ।
एति चिन्तामणी ल्यै रयीं आप ॥
कुमाऊं साहित्य व इतिहास ।
गीत लैं झौड़ा ऐरयीं खास ॥
भोटिया लोग सब ऐरयीं ।
ऊनी सामान सब ल्ये रयीं ॥
दुसाला कमल पांखी पसमीण ।
दरी चटाई मोहटा फिण ॥
चुटका गीलैचा थुलम ऐरै ।
भुटान बटि भोटीया ल्यरं ॥
लुवाका भद्यवा भला ऐरयीं ।
पाहाड़ी चामा का ज्वता एरयो ॥
तमाका तौल पर्याता ऐरैं ।
पितव काँसा सिन्फर ऐरै ॥

मेलै कौ बाजार खूब भारीरौ ।
बहौतै टुल कौतिक हैरौ ॥
बन्डी बन्यान पैन्ट ऐर्यीं ।
और अमरिकन कोट ऐर्यीं ॥
आघील यखो हलवाई ठाट ।
होटल हलवाई पकोड़ी चाट ॥
ब्रिज बासी हलवाई टुला ऐर्यीं ।
आगरा बटि पेठा न्यै रर्यीं ॥
समोसा मट्ठी कचौड़ी लकि ।
हलुवा पूरी पकौड़ी लकि ॥
मटर चणा आलू गुटूका ।
उनुमें खुटिया मर्च कुटूका ॥
दही सौटा का पकौड़ो बड़ा ।
आलूका टिकिया चहा दगड़ा ॥
चाहणी दूध मिलनौ निछा ।
पौडरौ दूध चलि रौहछा ॥
भरीरौ कौतिक नर लैं नारी ।
जगमगा कार है रौछा भारी ॥
रंग बिरंग का हरोया लाल ।
लैंधियाँ हैंति साड़ियों की चाल ॥
क्वे क्वे पुराणै रिवाज वला ।
आगड़ौ घागरौ पिछौड़ वला ॥

घागरौ आगड़ौ ख्वरम धोती ।
आगड़ी परा छोटो खलेती ॥
माला जंजीर बीच करेला ।
लाम पिठ्या छा लामै धमेला ॥
उसे रिवास मैंसुका हया ।
पूराणै पैनाव पैरी ऐरया ॥
मिरजाई पैजम टोपी यखारी ।
तण बादीया छै मिरजाई पारी ॥
नयीं लौडौं कौ फैसन नयीं ।
पैन्ड बुर्सट पैरी ऐरयीं ॥
टोपी निहाती इगलिस बाल ।
हतपरा हरीयाँ लाल रूमाल ॥
और आधीला सुणै हवाल ।
सुणि बटि सब कैलियो ख्याल ॥
पारा टै मजि हौल छा एक ।
बांकणि सभा हैछ बिशेक ॥
सभा में सब नेता ऐरनी ।
आपण आपण भाषण करनी ॥

आर्य नेता खुशीराम टमटा

खुशराम एक नेता महान ।
उनरौ जरा कै लियो ध्यान ॥

उनुलै बड़ौ उठायो भार ।
समिति बनै शिल्पकार ॥
शिलपकार वर्ग छा एक ।
बड़ौ छा उनुमें बुद्धि विवेक ॥
शिल्प कला का विद्वान सब ।
शिलप कारी ऊं करनी तब ॥
तब कछीया शिलपकार ।
कमी छी कुछ नेम आचार ॥
तब समाज में पिछड़ी हया ।
खुशराम ज्यूलै पलटी काया ॥
सबुकैं उनुल बुलाय तब ।
शिलपकार ऐगया सब ॥
उनुलै तब सिकायो ज्ञान ।
नियम धरम करायो ध्यान ॥
उनुलै कयो भाइयो सुणौ ।
सुणि समझी वै मनमें गुणौ ॥
नियम धरम मानणै चैछा ।
यज्ञो पवीत धारणै चैछा ॥
जपणौ चैछा गायत्री मंत्र ।
भारत बासी सब स्वतंत्र ॥
हरीजन सब समझी जाओ ।
सुधार समिति एक बनाओ ॥

बनाश्रो समिति शिलपकार ।
पिछड़ी जाति कौ करो सुधार ॥
चलायो उनुलै य अभियान ।
भारत भरीम फैलौ तमान ॥
बनिगे समीति लै गोंय कार ।
भवन एति हयो तय्यार ॥
तभणि वटि सभा यां हैछा ।
पब्लिक सब सुणण ऐंछा ॥
द्वि तीन तीन भाषण हनीं ।
बैठनी सुणनी आराम कनी ॥
खुश राम ज्यू आब स्वर्ग न्है गया ।
ऐति पिन्डाल बनैयी गया ॥
समीति बनै शिलपकार ।
पीछड़ी जाति कौ करो सुधार ॥
श्रद्धानजली ऊं पुरुषों हणि ।
हाथ जोड़छा यौ चिन्तामणी ॥

देवी धूरा जाने के रास्ते

चिन्तामणि ज्यू और सुनाश्रों ।
देवी धूरा जाहणी बाट बताश्रो ॥
कति बटि बाटौ कौंहणि जांछ ।
कतुक दिनम बापुजी बांछा ॥

सज्जनौ तुम कां बटि जाला ।
पैदल जाला की गाड़ीम जाला ॥
पैली वै बाटा पैंदल छीया ।
चार पोंछ दिनम उति जछीया ॥
आवता उति न्है गयीं गाड़ी ।
पाराका धारम जरयीं ठाड़ी ॥

पैदल रास्ता पाली पछांऊ से

पाली वै पैंदल जणौंछ जब ।
पैली न्है जाओ राणीखेत तब ॥
जालई बारखामों झीकड़ींबान ।
चीलना की ठाड़िम आलो औसान ॥
आघीन राणीखेत आय बजार ।
उति वै न्है जया धारौ धार ॥
उतीवै आघील लै जाओ बटा ।
मचखाली बटि दौला का घटा ॥
उति वैं आघील कोसी न्है जाओ ।
सिटोली बटि अल्मोड़ा जाओ ॥
अल्मोड़ा बटि है जालौं साथ ।
आघील न्है जाओ पुल विश्वनाथ ॥
विश्वनाथ बटि न्है जाओ ढौर ।
उति वै आघील न्है जाओ और ॥

आघील जै बटि जलना आयो ।
जलना बटि आघील चायो ॥
आघील जै वटि लमगड़ा आयो ।
लमगड़ा बटि छणौज आयो ॥
शैहर फाटक ऐ गोय तब ।
उतिवै न्है जावो मोरनौला सब ॥
मोरनौला बटि आघीला गोय ।
आघीला जैबटि बेड़चूला होय ॥
उति छैं मान सिंह दुकानदार ।
उनरा भौतै भला विचार ॥
मुसाफिरों कणि जगा दि दिनी ।
खाण पिणै की सब कै दिनी ॥
उति वै आघील लागी कराई ।
वलका मजि पहुँचा जाई ॥
उति वै आघिन ठाड़ि लै जैंछा ।
शंक घन्टों की आवाज ऐंछा ॥
देवीका मन्दिर ऐजांछ तब ।
हिनौल कणि न्है गया जब ॥
उति वै आघिल लैगो बजार ।
बजार मजि हैरौ कन्यार ॥
उति बारिष बहौत हैंछा ।
हात पार छाता जरूरै चैंछा ॥

मरी रौ कौतिक ऐ रै बहार ।
मथ बटि बारिष मुण कुव्यार ॥
पैदलै बाटौ बताओ एक ।
और लै आजि बटा अनेक ॥
आघिल सुणौ चिन्तामणि ।
गाड़िम जला जो देव धुर हणि ॥
पाली बै पैंली मासी न्है जावो ।
अल्मोड़ा जणियां गाड़ी चढ़ावो ॥
टिकट लिबटी बैठला जब ।
आघीला गाड़ी चलली तब ॥
चौखुटी द्वरहाट कफड़ा गया ।
गगास जैबटि कालिका गया ॥
उति बै गया अल्मोड़ा हणि ।
आघिल बताओ चिन्तामणि ॥
अल्मोड़ा बटि तिखौन गया ।
तिलौन बटि घाट न्है गया ॥
घाट बै गाड़िम गया लूघाट ।
उतकणि बटि हयौ चौबाट ॥
लूघाट गाड़ी बदली जाली ।
टनकपुर बै गाड़ी पै आली ॥
उ जाली तब धुन घाट हणि ।
खेतीखान हणी देवधूर हणि ॥

देवधुरा डनम न्है जाला जब ।
असाणी कौतिक देखला तब ॥
देशावरों बै जो आला जब ।
रेल गाड़िमा बैठला तब ॥
मथुरा आगरा लखनऊ बटि ।
बरेली कानपुर देहली बठि ॥
पैल्ली पहुँचो बरेली सब ।
उति बैं खटिमा न्है जाबों तब ॥
खटिमा बती टनक पुरा ।
उति बे मोटर जैंछ देव धुरा ॥
चम्पावत तब हैई प्रस्थान ।
उति गोरिया कौ जनम स्थान ॥
चन्द राजाओं का उति छैं किला ।
आजी लै उति थाण तैसीला ॥
उति बै गाड़ी लूघाट जैंछा ।
लूघाट बटि देव धुरा जैंछा ॥
एसिकै जाबो देव धूरा हणि ।
आघील बताओ चिन्तामणि ॥
आघील सुणैं धरि बटि ध्यान ।
जो जति रैंछा उतिक ध्यान ॥
नैनताल जिलक मैदानी हिस्सौ ।
भाबरी इलाकौ हयो जो हिस्सौ ॥

उतिबै देव धुरा जो जछा जब ।
रेलम ए जावो हलद्वाणि सब ॥
हलद्वाणि बटि मोटर हैंछा ।
मोर नौला तक रोजवेज जैंछा ॥
उति मोटरम बैठी जो गया ।
ज्योली कोट गया विरभट्टी गया ॥
विरभट्टी गेठीया भूमियां धार ।
आघील भुवाई आयो बजार ॥
भुवाई बटि मोटर चली ।
राम गढ़ गई गई भटली ॥
भटली बटि पहाड़ पानी ।
उति वै ट्रक लैं मिलि जानी ॥
उतणि बटि चलि मोटर ।
मोतिया पाथर दुर्गा नगर ॥
आघील शैहरै फाटक हयो ।
आखरी अड्डा मोर नौला हयो ॥
ऐसिकै सब देवी धूरा जया ।
देवी धूरा कौ किताब ल्याया ॥
कुमाउंनी भौत किताब आनी ।
उति चिन्तामणि दिल्ली बै ल्यानी ॥

देवीधुरा का प्राकृतिक सौंदर्य

देवीधूरा देवी का मन्दिर उत्तर भारत उत्तराखण्ड के एक पर्वत शिखर पर शोभित है। वहाँ की प्राकृतिक छटा निराली है। वहाँ एक छोटा सा बाजार है और एक डाकखाना है डाक बंगला भी है। इसके समीप में ही वन विभाग का रैंज आफिस भी है और मिडिल अपर के अलावा हाई स्कूल संस्कृत विद्यालय भी है एक शिवजी का मन्दिर है और चारों तरफ बस्ती है और खेती बाड़ी साग सब्जी की उपज भी है साँथ ही वहां पर एक आर्य शिल्पकार समिति का भवन है। मेले के दिनों में वहाँ पर पंडाल बनाया जाता है, सुन्दर सजाया जाता है और सभा में अच्छे-अच्छे प्रवक्ताओं के भाषण भी होते हैं जिसको स्व० श्री खुशीराम टमटा आर्य नेता भूतपूर्व एम. एल. ए. ने शिल्पकार भाईयों के सहयोग से बनाया है। अब वह भवन कुछ जीर्ण अवस्था में भी हो गया है। आशा की जाती है कि आर्य शिल्पकार समिति उसका जीर्णोधार करेगी वाँकी वहाँ के कई लोगों की अपनी दुकानें और मकान हैं। वहीं पर धुनाघाट लोहाघाट को जाने वाली रोड के चौराहे पर ही एक पनीराम जी आर्य की दुकान और मकान है। वह बड़े भावुक व्यक्ति हैं। उन्होंने कुमाउंनी भाषा में एक किताब भी लिखकर तैयार कर रखी है जिसमें उन्होंने अपनी जीवनी तथा देवीधुरा मेले का वर्णन कर रखा है समयाभाव के कारण वह अभी प्रकाशित नहीं हो सकी आगे प्रकाशित होकर पाठकों को प्राप्त हो जायेगी।

एक अदभुत दृश्य

देवीधुरा में देवी माई की विशेषता यह है कि वहां दो बहुत विशाल पर्वतों के बीच एक गुफा में भगवती का मन्दिर है जहाँ श्रद्धालु भक्त यात्रियों की सेवा सामग्री भगवती माता को अर्पण कर दर्शन कराने

के लिए पुजारी लोग बैठे रहते हैं। भक्त लोग एक-एक करके दर्शन कर बाहर को निकलते जाते हैं और मन्दिर के पीछे की तरफ बहुत बड़े विशालकाय पत्थर हैं जिनका वजन आंका नहीं जा सकता है वह ऐसे अधर रखे हैं कि जैसे किसी ने कहीं से बनाकर लाके वहां रखे होंगे। उन पत्थरों के कुछ नाम भी हैं। भीमसेन का शिल बट्टा आदि किंवदन्ति बताते हैं कि यह पांडवों के बनाये हुए हैं। कुछ लोग और भी कुछ बातें बताते हैं।

विशालकाय वृक्षों की बुर्जी

भगवती के मन्दिर की बुर्जी के ऊपर की चोटी पर देवदार के बहुत बड़े विशालकाय पेड़ों की एक बुर्जी सी बनी है और उसके पास कुछ छोटी-छोटी कुटिया व मन्दिर बने हैं वह धर्मशालों के रूप में काम आते हैं। वहाँ पर असोज के नवरात्रों में रामलीला भी होती है और वहाँ एक बहुत बड़ा पत्थर है वह ऐसा मालूम होता है जैसे जमीन के ऊपर अधर रखा हुआ है और धकेल दिया जाय तो बहुत दूर तक पहुँच जाय लेकिन वह ऐसा जमा हुआ है कि १० सम्बलों से १०० आदमी भी उसको लुढ़काने की कोशिश करें तो वह हिल नहीं सकता। वहीं पर एक प्राचीन हिन्डोला है। हिन्डोले सेडाकखाने की तरफ चलने में दायीं ओर को कुछ नीचे चलकर एक पानी की बावरी है जिसके नीचे गधेरे में ऊंचे ऊंचे देवदार के पेड़ों की बणी सी है उस बणी से पार को ऊपर धार में बस अड्डा है। जो सड़क कालौरी से आ रही है उसी के पास सरकारी रैंज आफिस है उसके नीचे देवदार के पेड़ों का जंगल है और वहीं गधेरे में पानी भी है जहाँ यात्रियों को नहाने धोने खाने पकाने के लिए पानी पर्याप्त मात्रा में मिलता है। देवी के मन्दिर के सामने पूर्व की ओर ऊपर की चोटी में शिव जी का मन्दिर है और डाक बंगला है। मन्दिर के नीचे पर्ली तरफ को हाई स्कूल बना है जहाँ कई बार हवाई जहाज भी बैठते हैं और उसके समीप अपर प्राईमरी पाठशाला भी है। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य बहुत ही मनमोहक है।

एक पौराणिक गाथा

इस मेले और पर्व का नाम द्यो आसाड़ी देवी धुरा प्राचीन काल से ही कहा जाता है। अठवाड़ व बगवाव भी प्राचीन काल से होती चली आयी है। ठीक सवर्ण शुल्का चतुदर्शी को अठवाड़ और पूर्णमाशी को बग्वाव होती है। देवीधुरा के निवासी बड़े बूढ़ों से और कुछ एतिहासिक गाथाओं के जानकार लोगों से पूछने पर भी यही मालूम होता है कि यह मेला अनादि काल से इसी प्रकार से होता चला आ रहा है। यह कुछ पता नहीं है कि किस उद्देश्य से यह मेला चलाया था और कैसे बना इसका कुछ एतिहासिक तथ्य कहीं लिखा नहीं मिलता। हम और हमारे पूर्वज भी इस मेले को ऐसा होता देखते आये हैं।

कुछ देवी धुरा के निवासी पण्डित पुरोहित आदि कर्मकाण्ड पूजा पाठ तथा कथा पुराणों के जानकारों से थोड़ा सा ऐसा मालूम होता है कि यह देवी भागवत में वर्णन आया है जब भगवान बाराहा का अवतार हुआ था तभी यहाँ वाराही देवी का अवतार हुआ और वारह भगवान से देवी का युद्ध हुआ और वह इसी स्थाम पर हुआ था। युद्ध में मगवती ने वाराह भगवान को जीत लिया था। तब मगवान बाराहा ने देवी को यहां स्थान दिया अथवा स्थापना को और अष्टबली चढ़ाने की प्रथा चलाई और अष्टवली चढ़ाई जाती है।

दूसरी दन्त कथा

दूसरी दन्तकथा कुछ लोग ऐसा बताते हैं कि विक्रमी सम्वत की बारवी शताब्दी तक का काल वीर गाथा काल कहलाता था। उस जमाने में बिना लड़ाई के लड़कियों की शादी नही होती थी। उसी जमाने में चन्द राजाओं का राज्य था। तब चन्द राजाओं में किसी राजा की राजकुमारी की शादी में वहाँ गढ़वाल और नेपाल के राजाओं की लड़ाई हुई थी उस जमाने में इन पहाड़ी राजाओं के पास शस्त्र कोई नहीं थे। लकड़ी और पत्थरों के शस्त्र होते थे या

मल्ल युद्ध होता था। तब से उसी लड़ाइयों को रिवाज के रूप में पत्थरों की बगवाल मनाते हैं।

ऐसा ही पाली पछाऊं में द्वाराहाट में बैशाख २ गते को साल्दे का मेला होता है। वहाँ भी एक प्राचीन पत्थर गाढ़ा हुआ है। उसमें हाथ की लाठी से एक-एक लाठी मारकर निकलते हैं और तल्ला गींवाड़ मासी में बैशाख के आखरी सोमवार के दिन सोमनाथ का मेला होता है। वहाँ भी दो तरफ से दो पार्टियाँ नंगारा लेकर जलूस के रूप में आती हैं। रामगंगा नदी में एक-एक पत्थर दोनों पार्टियां फेंकती हैं। यह सब लड़ाई के प्रतीक हैं लेकिन अब पर्व के रूप में मनाये जाते हैं। दोनों पार्टियों के आपस में द्वेष भाव नहीं रहता बल्कि मेल रहता है। खेलके रूप में इन त्यौहारों को मनाते हैं। वही बात यहाँ देवी धुरा में बगवाल की किंवदन्ती कहावत है।

ऐतिहासिक तथ्य

कुछ लोग कहते हैं कि यहाँ पहले देवी को नर बलि चढ़ती थी। हर साल एक मनुष्य की बलि चढ़ाई जाती है और एक बलि के लिए घर का एक व्यक्ति देने की हर धर की बारी आती।

एक दिन एक ऐसे घर की बारी आई कि उस घर में एक बुढ़िया रहती थी और उसका एक ही पुत्र था उसकी देवी को बलि चढ़ाने की बारी आ गई। तब बुढ़िया देवी से बहुत रो रोकर चिनकारियां मारकर निवेदन करके कहने लगी कि हे मातेश्वरी मेरा एक ही पुत्र है यह मैंने बड़ी कठिनाई से पाला हुआ है और मेरा कोई नहीं है आप इसकी बलि मत लो मुझे माफ कर दो। तब भगवती ने उसकी करुण पुकार सुनकर कहा कि मैं आज से नर बलि नहीं लूंगी तुम यहां बगवाल खेलना शुरू कर दो उसमें थोड़ा भी खून किसी के कोई भी अंग से निकल आयेगा तो वही मेरी बलि मानी जाएगी। कहते हैं तब से यह नर बलि बन्द हो गयी और बगवाल शुरू हो गयी।

कुमाउंनी साहित्य सदन

३००५, चौरासी घन्टा बाजार सीताराम दिल्ली

जैकणि किताब चैला, एति बै मंगया ।
जैकणि छपाण हैंला, ऐति बै छपया ॥
विज्ञापन कविता में दिण चाला जब ।
ज्य लेखाणा चाला, एति बतै जया सब ॥
कुमाउंनी, गढ़वाली, किताब नेपाली ।
जैकणि चहैला जब चिट्ठि दिया डाली ॥
दिल्ली की झलक देखो कुमाऊं की काया ।
लोकगीतों गुच्छ तुम जरूर मंगाया ॥
झोड़ों का झमाका लिया, पराचीन होली ।
शिव जी को ब्या देखिया पार्वती डोली ॥
और देखौ किताबों का बड़ा बडा ठाट ।
मालसाई हरुहीत, कुमाऊं सम्राट ॥
पड़ा जन्तरि लकि, कथा लै कहानी ।
कर्मकाण्ड पूजा पाठ सब मिली जानी ॥
देहली में कुमाउंनी साहित्य सदन ।
सीताराम बाजारम क्वे भुलिया झन ॥

कुमाऊंनी सहित्य सदन तथा मँडल की कितबों की सूची

क्र० सं०	किताब का नाम		क्र० सं०	किताव का नाम	
	दिल्ली की झलक	१.००	२०	राजा मालसाईविनोद	१.५०
२.	,,	१.००	२१	बीरवालक हरू सिहहीत	१.५०
३.	,,	१.००	२२	कुमाउनी खड़ी होली	१.००
४.	,,	१.००	२३	होली बहार	०.८०
५.	नैना सरोवर	१.००	२४	पहाड़ी खड़ी होली	०.७५
६.	प्राचीन होली	१.००	२५	शिव पार्वती विवाह	१.००
७.	कुमाऊं के सम्राट १भा.	१.००	३१	राजुला सौक्याण	२.००
८.	,, ,, २भा.	१.००	३	वखत की वात	०.३०
९.	,, ,, ३भा,	१.००	३३	उत्तम हाई स्कूल	०.४०
१०.	,, ,, ४भा.	१-००	३४	अपना विचार	०.५०
११.	सम्पूर्ण चारों भाग	५.००	३५	सासू ब्वारी	१-००
१२.	झोड़ों का झमाका	१.००	३६	वाव बेटी	१-००
१३.	दूनागिरी चार्लासा	०.५०	३७	मेला देवी धूरा	०.७५
१४.	लोकगीतों का गुच्छा	१.००	३८	पूर्णागिरी देवी की यात्रा	.७५
१५.	कुमाऊं की काया	१.००	३९	पर्वतीय नारी	.७५
१६	प्योली बुरास	१.५०	४०	मां बेटी	.७५
१७	बलिदान खण्डन	०.३५	४१	नवीन होली संग्रह	.७५
१८	चुनाव आन्दोलन	०.२५	४२	दीवानी विनोद	१-५०
१०	बाजिगो रण सिंह	०.३५	४३	भारत बंगला देश	.७५
			४४	रिवाज	.७५

प्रधानमंत्री का बीस सूत्री आर्थिक कार्य-क्रम

को

सफल बनाने के लिए कुमाऊंनी साहत्य के नये प्रकाशन

भूल सुधार:—

प्रस्तुत पुस्तक के पहले पेज की मुख्य लायन में मशीन पर टायप टूट जानेसे असुद्धि मेला देवी धूरा की जगह मला देवी धूरा हो गया।
शुद्ध शब्द है मेला देवी धूरा